योगसूत्र में आचार मींमांसा की अवधारणा
(Concept of Ethics in Yoga sutra)

डॉ. राम किशोर

सहायक आचार्य (योग)

स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज,

छत्रपति शाहू जी महाराज, विश्वविद्यालय, कानपुर

योगसूत्र में आचार मींमांसा की अवधारणा
(Concept of Ethics in Yoga sutra)

- चित्त प्रसादन की अवधारणा
- ईश्वरप्रणिधान की अवधारणा
- क्रियायोग की अवधारणा
- अष्टांगयोग की अवधारणा
- कर्मसिद्धान्त की अवधारणा

चित्त प्रसादन की अवधारणाा

मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविशयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनाम्। योगसूत्र 1.33

सुख, दुःख, पुण्यात्मा और पापात्मा में क्रमशः जिन गुणों के विषय है, उनसे मित्रता, करुणा, (दया), मुदिता (प्रसन्नता) एवं उपेक्षा की भावना से चित्त निर्मल हो जाता है।

ईश्वरप्रणिधान की अवधारणा

क्लेशकर्मविपाकाशयरपरामष्टः पुरुषविशेषईश्वरः। योगसूत्र 1.24

क्लेश, कर्म, विपाक और आशय इन चारों से अपरामृष्ट (असम्बद्ध–अछूता) तथा जो विशिष्ट चेतनतत्व अर्थात् जो परम् आत्मा है, वह ईश्वर है।

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्। योगसूत्र 1.25

उस (ईश्वर) में सर्वज्ञता का कारण रुप बीज अर्थात् ज्ञान निरतिशय अर्थात् सर्वोच्च है।

पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। योगसूत्र 1.26

वह ईश्वर काल के द्वारा सीमित न होने से पूर्वजों (पूर्व मे हुए देवों) का भी गुरु है।

तस्य वाचकः प्रणवः। योगसूत्र 1.27

उसका वाचक नाम प्रणव अर्थात् ऊँ कार है।

तज्जपस्तदर्थभावनम्। योगसूत्र 1.28

उस ऊँ कार (नाम वाले ई वर) का जप और उसके अर्थ स्वरुप परमात्मा का चिन्तन करने से समाधि लाभ प्राप्त होता है।

ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च। योगसूत्र 1.29

उक्त साधन के द्वारा विघ्न बाधाओं का अभाव और अन्तरात्मा के स्वरुप का ज्ञान भी हो जाता है।

क्रियायोग की अवधारणा

तपःस्वाध्यायश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।

योगसूत्र 2.1

तप, स्वाध्याय एवं ईश्वरप्रणिधान (शरणागति) ये तीनों क्रियायोग है।

अष्टांगयोग की अवधारणा

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावन्गानि। योगसूत्र 2.29

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ (योग के) अंग है।

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। योगसूत्र 2.30

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम है।

जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्। योगसूत्र 2.31

(उपर्त्तुक्त यम) जाति, देश, काल और निमित्त की सीमा से रहित सार्वभौम होने पर महाव्रत हो जाते हैं।

शाौचसन्तोशतपः स्वाध्याय□वरप्रणिधानानि नियमाः। योगसूत्र 32

शौच, संतोश, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान (शरणागति) ये पाँच नियम है।

वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्। योगसूत्र योगसूत्र 2.33

जब वितर्क (यम एवं नियम के विरोधी हिंसा आदि के भाव) यम–नियम के पालन में अवरोध पैदा करें तब उनके प्रतिपक्षी विचारों का प्रत्येकक्षण चिन्तन करते रहना चाहिए।

कर्मसिद्धान्त की अवधारणा

- शुक्ल कर्म
- कृष्ण कर्म
- कृष्ण शुक्ल मिश्रित कर्म
- अकृष्ण—अशुक्ल कर्म

धन्यवाद

Thanks